पड़ोसी के दुख में काम आना उसका अधिकार है

मुहम्मद अज़हर मदनी

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह की क़सम वह मुसलमान नहीं, अल्लाह की क़सम वह मुसलमान नहीं, अल्लाह की क़सम वह मुसलमान नहीं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल कौन मुसलमान नहीं है? फ़रमायाः जिस का पड़ोसी उसकी बुराई और दुख से सुरक्षित न रहे। (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख़्स स्वर्ग में नहीं जायेगा जिस का पड़ोसी उसकी बुराई से सुरक्षित न हो। (सहीह मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम मुझे पड़ोसी के बारे में (पड़ोसी के अधिकार का ख्याल रखने के बारे में) बराबर जोर देते थे यहां तक कि मुझे यह लगने लगा कि कहीं उसका वारिस न बना दिया जाये। (सहीह बुख़ारी सहीह मुस्लिम)

ऊपर बयान की गई हदीसें हमें इस बात की शिक्षा देती हैं कि समाज में रहने का सिद्धांत यह है कि एक इन्सान को दूसरे इन्सान से दुख न पहुंचे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जोर देकर कहा कि पड़ोसी को दूसरे पड़ोसी से दुख नहीं पहुंचना चाहिए, अगर कोई पड़ोसी दूसरे पड़ोसी को दुख पहुंचाता है तो इसका मतलब यह है कि वह इस्लाम के इस आदेश का इन्कार कर रहा है और उसे दूसरों की परवाह नहीं है जब कि इस्लाम की शिक्षा यह है कि समाज में रहने वाले एक दूसरे के दुख सुख में काम आयें केवल अपने लिये न जियें बल्कि अगर पड़ोस में कोई आर्थिक रूप से कमजोर है तो मालदार पड़ोसी अपने गरीब पड़ोसी की अपनी ताकत के अनुसार उसकी मदद करे, पड़ोसी के बारे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश का यही अर्थ है। समाज का मालदार वर्ग जिस तरह अपने ऊपर पैसा खर्च करता है, उसी तरह अल्लाह की दी गई नेमत से पड़ोसी को भायदा पहुंचाये, दुख पहुंचाने के बजाये, उसकी मदद करे। आज भौतिकवाद के कारण रिश्तेनाते बिखर चुके हैं, लोग पड़ोसी और अपनों से दूर हो गये हैं, मामूली मामूली बात पर एक पड़ोसी का दूसरे पड़ोसी से झगड़ा शुरू हो जाता है अब यह स्थिति पैदा हो गई और कभी कभार मामूली कहा सुनी के बाद वर्षों महीनों तक बात चीत बन्द हो जाती है यह सब इस्लाम की शिक्षाओं को नजरअन्दाज़ करने का अंजाम है। ऐसे में हमारे लिये ज़रूरी है कि हम इस्लाम के पड़ोसी के बारे में बताये गये अधिकार को समझें और उस पर अमल करें इसमें दुनिया का भायदा होने के साथ-साथ पड़ोसी के अधिकारों का ख़्याल रखने की वजह से आख़िरत का भी फायदा है।

मासिक

इसलाहे समाज

दिसंबर 2024 वर्ष 35 अंक 12

जुमादल उख़रा 1446

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	पड़ोसी के दुख में काम आना ...	02
2.	हमारा दायित्व	04
3.	अल्लाह की नेमतों का शुक्रिया अदा करें	05
4.	अनाथ और अनाथों के संरक्षक	09
5.	मानवता के निर्माण एवं विकास में ...	11
6.	जिन्न	14
7.	जैन इज़्म और मानव सम्मान	18
8.	मानवीय मूल्यों की अहमियत	20
9.	प्रेस रिलीज़	21
10.	प्रेस रिलीज़	23
11.	३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स सफलतापूर्वक संपन्न	24
12.	धार्मिक ज्ञान और इतिहास का महत्व	25
13.	अम्न व शान्ति	26
14.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सम्पादकीय

हमारा दायित्व

विश्व स्तर पर हालात चाहे जैसे भी हों हमारा फर्ज़ बनता है कि देश और मानवता के निर्माण और उसको विकसित करने के लिये प्रयास करें और दुनिया को भाईचारा, सद्भाव, सांप्रदायिक सौहार्द, प्रेम एवं अहिंसा और अम्न व शान्ति का पाठ पढ़ायें। देश और समाज को हर प्रकार के अपराध से पवित्र करने और इसे अम्न व शान्ति का स्थल बनाने के लिये प्रेरित करें। पवित्र कुरआन और पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मानवतावाद शिक्षाओं को इंसानों तक पहुंचाने के लिये हम लोग विभिन्न तरीकों से काम करें।

पवित्र कुरआन ने हमें भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने की वजह से बेहतरीन उम्मत करार दिया है इस लिये देश व मानवता के सामने विश्व स्तर पर इस्लाम का सहीह और बेहतर तरीक़े से परिचय करायें, इस्लाम के असल स्रोतों कुरआन एवं हदीस से इसकी शिक्षाओं को साधारण करें और इसे घर घर और हर व्यक्ति तक पहुंचाने का कर्तव्य और दायित्व निभाएं।

संसार के सामने व्यवहारिक आदर्श पेश करें, सदाचार का प्रदर्शन करें और अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार को अदा करने के लिये व्यवहारिक कदम उठायें और अल्लाह को राज़ी करने के एरादे से नेक कर्म करें।

इस बात का उल्लेख होते रहना चाहिए कि नफ़रत फैलाने वाले हिन्दू और मुसलमान नहीं हैं बल्कि यह दोनों के दुश्मन हैं या दोनों के नादान दोस्त हैं यह देश और मानवता के शुभचिंतक नहीं हो सकते।

आपसी भाईचारा सहिष्णुता का वातावरण बनाये रखने के लिये हर तरह से हर वक़्त तैयार रहें और इसे अपना दायित्व समझ लें और इसके लिये उन तमाम संसाधनों को प्रयोग में लायें जिन से देश व मानवता के तमाम वर्गों और हर तरह के लोगों तक पहुंच सके, विशेष रूप से व्यवपार, शिक्षा और हर मैदान में एक दूसरे से संबन्ध बढ़ायें और ताल-मेल पैदा करें, मुसलमानों की शैक्षणिक एवं टेकनिकल संस्थाओं और अन्य गरीब व ज़रूरत मन्द बच्चों औरतों बेवाओं, यतीमों और मदर्सों को सहयोग दें, प्रेम के साथ जीना सीखें, सज्जनता, शुभचिंतन, सहनशक्ति, मानवता प्रेम और मानव सममान को विकसित करें यह केवल हमारी मुल्की, समाजी ज़रूरत ही नहीं बल्कि हमारा धार्मिक कर्तव्य भी है इससे दूसरों तक अपनी बातें पहुंचाने का अवसर मिलेगा। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मानवता का सम्मान और विश्व ध र्म'' के शीर्षक पर पिछले दिनों आयोजित होने वाली ३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स ने इन ही दायित्वयों को निभाने और अपनी बात को दूसरों तक पहुचाने का सन्देश दिया है।

❑❑❑

अल्लाह की नेमतों का शुक्रिया अदा करें

अबू अदनान सनाबिली

अल्लाह तआला का लाख लाख शुक्र एवं उपकार है कि वह हमें रोज़ी देता है। हम रात दिन पाप करते हैं, हराम काम करते हैं, शरीअत के आदेशों का उल्लंघन करते हैं लेकिन इसके बावजूद अल्लाह तआला हमें रोज़ी देता है, इसलिए हमें अल्लाह का शुक्रगुज़ार और कृतज्ञ होना चाहिए इसी तरह हमें सोचना चाहिए कि दुनिया में बहुत से ऐसे लोग भी हैं जिनको ढंग से दो वक़्त की रोटी नहीं मिलती, वह रोटी के मोहताज हैं, भुखमरी पर मजबूर हैं और गरीबी की ज़िंदगी बसर कर रहे हैं लेकिन अल्लाह ने हमें अच्छा खाना, पीने का पानी और रहने के लिये मकान दिया है और इज्ज़त की जिंदगी गुज़ार रहे हैं जब हम सोचेंगे तो हमारा दिल शुक्रगुज़ारी की भावना से भर जाएगा।

नेमत मिलने पर जो अल्लाह का शुक्रिया अदा नहीं करता वह नाशुक्री करता है और अल्लाह ने शुक्रगुज़ारी की शिक्षा दी है और नाशुकरी से रोका है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

इसलिए तुम मेरा जाप करो, मैं भी तुम्हें याद करूंगा, मेरी शुक्रगुज़ारी करो और नाशुकरी से बचो। (सुरह बक़रा-१५२)

शुक्रगुज़ारी एवं कृतज्ञता अल्लाह की इबादत का एक हिस्सा है और शुक्र न करने वाले अल्लाह की इबादत में कोताही करने वाले हैं जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है :

‘‘ऐ ईमान वालो! जो पवित्र चीज़ें हमने तुमहें दे रखी हैं उन्हें खाओ, पियो और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो, अगर तुम खास उसी की इबादत करते हो।’’ (सूरह बक़रा-१७२)

शुक्रगुज़ारी से रोज़ी में बढ़ोतरी और बरकत होती है। अल्लाह ने फरमायाः

‘‘और जब तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुमने शुक्रगुज़ारी की तो बेशक मैं तुम्हें ज़्यादा दूंगा और अगर तुम नाशुकरी करोगे तो निस्संदेह मेरा प्रकोप बहुत सख़्त है। (सुरह इब्राहीम-७)

इन आयतों से मालूम होता है कि हमारे अंदर शुक्र की भावना हमेशा रहनी चाहिए और हमें अल्लाहत तआला का शुक्र जुबानी और व्यवहारिक रूप से अदा करना चाहिए। जुबान से शुक्र अदा करने का अर्थ यह है कि हम अल्लाह की तारीफ़ करें और व्यवहारिक शुक्र यह है कि हम अल्लाह की इबादत करें जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इबादतें किया करते थे और जब आप से इस बारे में पूछा गया तो आपने फरमायाः जी अल्लाह ने मेरे ऊपर इतना उपकार किया है, उसने मेरे अगले पिछले पाप मआफ़ कर दिए हैं, क्या मैं उसका शुक्रिया अदा न करूं? अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह अपने बंदे से इस पर खुश होता है कि जब वह खाएं तो उसका शुक्र अदा करें और जब पिएं तो उसका शुक्र अदा करें। (सहीह मुस्लिम-२७३४७)

मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ में रात भर खड़े रहे यहां तक कि आपके दोनों पांव सूज गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा गया कि अल्लाह तआला ने आपके अगले पाप मआफ कर दिए हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क्या मैं उसका शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बंदा न बनूं। (सहीह बुखारी ४५५७, सहीह मुस्लिम २८२०)

नेमतों के बारे में पूछताछ का एहसास

हर इंसान को इस बात का आभास एवं एहसास होना चाहिए कि अल्लाह ने खाना पीना, कपड़े और अन्य नेमतें दी हैं इसके बारे में प्रलय के दिन पूछताछ होगी। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''फिर उस दिन तुमसे अवश्य नेमतों का सवाल होगा।'' (सूरह तकासुर-८)

इस आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि अल्लाह तआला हमसे दुनिया की नेमतों के बारे में पूछेगा कि हमने तुम्हें जो नेमतें दी थीं उनके साथ तुमने क्या किया, तुमने किन साधनों से इनको प्राप्त किया, और कहां खर्च किया। (तफ्सीर कुर्तबी ३/३६५)

अल्लाह तआला ने हमारे ऊपर जितना इनआम और उपकार किया है, इन नेमतों के बारे में हमसे प्रलय के दिन पूछेगा। कुरआन की इस आयत में जिस नेमत का उल्लेख किया गया है इसमें दुनिया की नेमतें भी शामिल हैं चाहे वह खाना पीना, कपड़ा और घर की शक्ल में ही क्यों न हो। इसकी पुष्टि निम्नलिखित हदीसों से होती है।

अबू हुरैरहा रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रूटिंग के खिलाफ ऐसे वक़्त में घर से निकले जब आप घर से नहीं निकला करते थे और ना उस वक़्त कोई आपसे मुलाकात करता था। फिर आपके पास अबू बक्र रज़ियल्लाहो अन्हो पहुंचे तो आपने पूछा अबू बक्र तुम यहां कैसे? उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इसलिए निकला ताकि आपसे मुलाकात करूं औरआपके चेहरे को देख सकूं और आप पर सलाम पेश कर सकूं। कुछ देर बाद उमर रज़ियल्लाहो अन्हो भी आपके पास पहुचें, आपने पूछाः उमर! तुम यहां कैसे आए? इस सवाल पर उन्होंने सख्त भूख की शिकायत की, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे भी कुछ भूख लगी है फिर सब मिलकर अबुल हैसम बिन तैहाम अंसारी के घर पहुंचे, उनके पास बहुत ज़्यादा खजूर के पेड़ और बकरियां थीं मगर उनका कोई खादिम नौकर नहीं था। उन लोगों ने अबुल हैसम को घर पर नहीं पाया तो उनकी बीवी से पूछाः तुम्हारे पति कहां हैं? उन्होंने जवाब दिया कि वह हमारे लिए मीठा पानी लेने गए हैं। बातचीत हो ही रही थी कि इसी बीच अबुल हैसम एक भरा हुआ बर्तन पानीलेकर आ पहुंचे। उन्होंने बर्तन को रखा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लिपट गए और कहाः मेरे मां बाप आप पर फिदा हों, फिर सबको अपने बाग़ में ले गए, उनके लिए एक बिसतर बिछाया फिर खजूर के पेड़ के पास गए और वहां से खजूरों का गुच्छा लेकर आए और इसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः इसमें से हमारे लिए ताज़ा खजूरें क्यों नहीं चुन कर ले आये? उन्होंने कहाः ऐ

अल्लहा के रसूल! मैंने चाहा कि आप स्वयं उनमें से चुन लें, या यह कहा कि आप हज़रात पक्की खजूरों को कच्ची खजूरों में से खुद पसंद कर लें। बहरहाल सबने खजूर खाए और उनके इस लाए हुए पानी को पिया, इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है यकीनन यह उन नेमतों में से है जिनके बारे में क़्यामत के दिन सवाल किया जाएगा और वह नेमतें यह हैं बाग़ की ठंड छांव, पकी हुई अच्छी खजूरों और ठंडा पानी। फिर अबुल हैसम उठ खड़े हुए ताकि उन लोगों के लिए खाना तैयार करें तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे कहाः दूध वाले जानवर को जबह ना करना इसलिए आप के हुक्म के अनुसार उन्होंने बकरी का एक मादा या नर बच्चा जबह किया, इसे पका कर इन हज़रात के सामने पेश किया, इन सभों ने इसे खाया फिर आपने अबुल हैसम से पूछाः क्या तुम्हारे पास कोई गुलाम है? उन्होंने नहीं में जवाब दिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब हमारे पास कोई कैदी आए तो तुम हमसे मिलना। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास दो कैदी लाए गए जिनके साथ तीसरा नहीं था, अबुल हैसम भी आये तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा कि इन दोनों में से किसी एक को पसंद कर लो, उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! आप ही हमारे लिए पसंद कर लीजिए। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक जिससे मशवरा किया जाए वह अमीन अमानत दार होता है, इसलिए तुम इसको ले लो एक गुलाम की तरफ इशारा करते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात कही। क्योंकि हमने इसे नमाज़ पढ़ते हुए देखा है और इस गुलाम के साथ अच्छा व्यवहार करना फिर अबुल हैसम अपनी बीवी के पास गए और अल्लाह के रसूल की बातों से उसे सूचित किया। उनकी बीवी ने कहा कि तुम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वसीयत को पूरा नहीं कर सकोगे मगर यह कि इस गुलाम को आज़ाद कर दो इसलिए अबुल हैसम ने तुरंत इसे आज़ाद कर दिया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला ने हर नबी या खलीफा के साथ राज़दार साथी भेजा है जिनमें से एक उसे भलाई का हुक्म देता है, बुराई से रोकता है जबकि दूसरा उसे खराब करने में कोई कसर नहीं छोड़ता, इसलिए जिसे बुरे साथी से बचा लिया गया तो मानो वह बड़ी आपदा से छुटकारा पा गया। (सहीह मुस्लिम २०३८, सुनन तिर्मिज़ी २३६९, रिवायत के शब्द सुनन तिर्मिज़ी के हैं)

जहहा्क बिन अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मैंने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो को कहते हुए सुना कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

प्रलय के दिन सबसे पहले बंदे से जिन नेमतों के बारे में पूछा जाएगा वह यह हैं उससे कहा जाएगा क्या मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे शरीर को तंदुरूस्त और ठीक-ठाक नहीं रखा और तुम्हें ठंडा पानी नहीं पिलाया। (सुनन तिर्मिज़ी ३३५८, शैख अल्बानी रहिमाहुल्लाह ने इस हदीस को सहीह तिर्मिज़ी में सहीह क़रार दिया है)

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

इंसान का पांव कयामत के दिन उसके रब के पास से नहीं हटेगा यहां तक कि उससे पांच चीज़ों के बारे में पूछ लिया जाएगाः उसकी आयु के बारे में कि उसे कहां खर्च किया, उसकी जवानी के बारे में कि उसे कहां खपाया, उसके माल के बारे में कि उसे कहां से कमाया और किस चीज़ में खर्च किया और उसके ज्ञान के बारे में कि अपने ज्ञान पर किस हद तक अमल किया। (सुनन तिर्मिज़ी २४१६, शैख अल्बानी रहिमाहुल्लाह ने इस हदीस को सहीहुल जामे ७२९६ में इस हदीस को सहीह करार दिया है)

अबू उसैब रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि एक बार की घटना है कि रात के वक्त अल्लाह के रसूल घर से बाहर निकले और मेरे यहां आए और मुझे बुलाया। मैं अपने घर से निकल कर आपके साथ चला गया, फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू बक्र रज़ियल्लाहो अन्हो के पास आए और उनको बुलाया। वह भी अपने घर से निकलकर साथ आ गए, इसके बाद आप उमर रज़ियल्लाहो अन्हो के यहां आए और उनको भी बुलाया वह भी घर से निकल कर आपके साथ आ गए। फिर आप सबको लेकर रवाना हुए यहां तक कि एक बाग़ में पहुंचे जो एक अंसारी सहाबी का था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाग़ के मालिक से फरमाया कि हमें खजूर खिलाओ। बाग़ के मालिक ने खजूरों का एक गुच्छा लाकर हमारे सामने रख दिया। इसमें से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी खाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा (अर्थात हम लोगों) ने भी खाया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने और हमने पिया इसके बाद आपने फ़रमाया कि यकीनन क़यामत (परलय) के दिन तुमसे इस नेमत के बारे में सवाल किया जाएगा। बयानकर्ता कहते हैं कि यह सुनकर उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने खजूरों का गुच्छा लिया और इसको ज़मीन पर दे मारा यहां तक कि इसकी कच्ची खजूरें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने बिखर गईं फिर उन्होने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल कया क़यामत के दिन हमसे इसके बारे में सवाल किया जाएगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हां हर नेमत के बारे में सवाल किया जाएगा चाहे वह कम हो या ज़्यादा लेकिन तीन चीजों के बारे में सवाल नहीं होगा, एक तो कपड़ा जिस से इंसान अपना शरीर ढांपता है, दूसरा रोटी का टुकड़ा जिसके जरिए अपनी भूख को दूर करें और तीसरा बिल जिसमें गर्मी और सर्दी से बचने के लिए घुस जाए। मुस्नद अहमद २०२४४, शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इस हदीस को सहीहुल तरग़ीब वत्तरहीब ३२२१ में हसन करार दिया है।

आप इन हदीसों को पढ़ें और सोचें कि दुनिया की जिंदगी जिसमें हम आखिरत की तैयारी के लिए भेजे गए हैं और हम आख़िरत की तरफ बढ़ते जा रहे हैं, इस दुनिया की जिंदगी के पल-पल के बारे में और इसमें मौजूद छोटी बड़ी नेमतों के बारे में पूछा जाएगा कि हमने इन्हें किन माध्यमों से हासिल किया? क्या इसे जायज़ तरीके से खर्च किया या अवैध तरीके से खर्च किया? इस नेमत से ऊर्जा हासिल करने के बाद हमने हराम कामों के करने में तो नहीं खर्च किया।

❑❑❑

अनाथ और अनाथों के संरक्षक

ख़ुर्शीद आलम मदनी

इस्लाम ने समाज के कमजोरों और गरीबों के बारे में यह निर्देश दिया कि उनके वजूद को बोझ न समझा जाये बल्कि उनके दुख दर्द को महसूस करते हुए उन्हें गले लगाया जाये पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुमहें जो रोज़ी दी जा रही है और तुम्हारी जो मदद की जा रही है वह इन कमजोरों की वजह से हो रही है। (अबू दाऊद)

समाज का सबसे दयनीय वर्ग बाप के दया करूणा के क्षाँव से वंचित अनाथ है। इस्लाम के आने से पहले अनाथों (यतीमों) के साथ ज़ालिमाना व्यवहार किया जाता था वह बच्चा पूरी ज़िन्दगी ठोकर खाता था और खानदान व समाज की शफक़त व मुहब्बत से महरूम (वंचित) रहता था उसे बाप की वरासत का हक़दार नहीं समझा जाता था उसके सरपरस्त उसकी जायदाद हज़्म कर जाते थे, अरब के बड़े क़बाइल और उनके सरदारों का व्यवहार बड़ा वहशियाना था, इन यतीमों के साथ बदसुलूकियाँ हो रही थीं, नाइंसाफियां हो रही थीं, उनका कोई रखवाला नहीं था, यतीम बच्चियों की जायदाद हड़पने की नियत से वह उससे शादी कर लेते थे उनका कोई पुर्सानेहाल नहीं था लेकिन उन की दौलत पर सबकी निगाह होती थी। ऐसे संगीन माहौल में जबकि यह ज़ालिम दुनिया यतीमों के साथ भी रहम करना नहीं जानती थी इस्लाम के सूरज का उदय हुआ और यतीमों के संरक्षक, सेवकों के मददगार, बेवाओं के रखवाले पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सन्देशवाहक बना कर भेजे गये फिर इसके बाद मजलूम वर्ग के साथ जुल्म की दास्तान बन्द हो गई, इसकी खुशहाली का दौर आया और ज़िन्दगी में बाग़ व बहार पैदा हुई और ऐसा इस लिये हुआ कि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यतीमों के दर्द को जानते थे और जिसे सब से पहले अल्लाह तआला ने संबोधित करके उनका भूतपूर्व याद दिलाया ''आप भी यतीम थे इसलिये आप किसी यतीम पर सख्ती न करें''

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यतीमों के बारे में अल्लाह तआला का यह पैगाम सुनाया कि यतीमों के मालों में ख़्यानत न करो बालिग़ होने के बाद उनके माल उनके हवाले कर दो। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''और यतीमों को उनका माल दे दो'' (सूरे निसा-२) ''और उनके बड़े हो जाने के डर से उनके मालों को जल्दी जल्दी फ़ुज़ूल खर्चियों में तबाह न करो''। (सूरे निसा)

यतीमों के रखवाले उनके साथ ऐसा व्यवहार करें जो वह अपने मरने के बाद अपने बच्चों के साथ किए जाने को पसन्द करते हैं। क़ुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''जो लोग नाहक़ यतीमों का माल खाते हैं वह अपने पेट में आग ही भर रहे हैं और अनक़रीब वह दोज़ख में जाएंगे। (सूरे निसा-१०)

साथ ही पैगम्बर हज़रत मुहम्मद ने यहीमों के साथ अच्छा

व्यवहार करने को प्रभावी अन्दाज़ में बयान करते हुए सहाबा किराम के जेहन व दिमाग में यतीमों से मुहब्बत और उनकी देखभाल का जज़्बा पैदा करने की प्रेरणा दी।

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सबसे बाबर्कत व मिसाली घराना वह है जिस में कोई यतीम हो और उसके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता हो और वह घर सबसे बुरा है जिस घर में यतीम के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है (इब्ने माजा-३६६६) पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सुनो जो लोगा यतीमों की देखभाल करते हैं वह जन्नत में मेरे साथ होंगे (बुख़ारी) पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स० ने फरमायाः ऐ अल्लाह मैं दो कमज़ारों के हुकूक की अदायगी के बारे में लोगों को बहुत डराता हूं वह औरत और यतीम हैं। (नेसई)

व्यवहारिक तौर पर आपने समाज के कमज़ोरों, बाप के प्रेमभाव से वंचित बच्चों को समाज के ज़ालिम लोगों से उनका अधिकार दिलाया, इस्लाम के शुरूआती दौर में एक मजलूम औरत की मदद की और एक अत्याचारी से इस औरत का हक़ दिलवाया, एक बच्चा अबू जहल की किफालत और देख रेख में था, एक दिन बच्चा फटे पुराने कपड़े में अबू जहल के पास आया और मदद का अनुरोध किया लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया वह कुरैश के सरदारों के पास गया, सब ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाने का मश्वरा दिया, आखिर कार (अन्ततः) वह आप के पास आया और अपनी विपदा को बयान किया सुनते ही आप तुरन्त अबू जहल के पास गये और फरमाया इस यतीम का माल दे दो और उसने तुरन्त उसने उसका माल वापस कर दिया।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने इस अमल से यह पैग़ाम दिया कि समाज की इस्लाह के लिये ज़रूरी है कि समाज के बाअसर लोग किसी जुल्म पर खामूश न रहें (क़ानून की सीमा में रहते हुए) याद रखें कि समाज में बिगाड़ उस वक़्त पैदा होता है जब समाज के बड़े लोग बुराइयां देख कर खामूश हो जाएं, इस व्यवहार शैली से इन्सानों की बस्ती में उलझन पैदा होती है, निर्दोष बच्चे प्रताड़ित होते हैं, मजलूम औरतें कराहती हैं और कमजोर लोग आहें भरते हैं, हक़ व इन्साफ के चिराग टिमटिमाने लगते हैं आप के इन आदेशों, व्यवहार व आचरण ने इतिहास के धारे को मोड़ दिया, विचार शैली की दिशाएं बदल दीं, सहाबा किराम यतीमों को कलेजे से लगाने लगे और उनकी किफालत और पालन पोषण में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने लगे।

हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहो बारे में शहादत के बाद उनकी एक बच्ची की किफालत के लिये कई लोग आगे आए हज़रत अली, हज़रत जाफर और हज़रत जैद बिन हारिसा के बीच मतभेद हो गया उनमें से हर एक की इच्छा थी कि वह इस बच्ची की किफालत करेगा। अल्लहा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह कहते हुए इस बच्ची को हज़रत जाफर के हवाले किया कि खाला मां के दर्जे में होती है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

ज़रूरत है कि हम यतीमों के बारे में अपनी जिम्मेदारियों को महसूस करें समाज के मालदार लोग अनाथालय काइम करें और इन यतीमों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण का प्रबन्ध करें ताकि वह अपनी कौम के लिये लाभाकरी और देश के लिये मिसाली शहरी बन सकें।

मानवता के निमार्ण एवं विकास में धर्मों की भूमिका

डा० रफीउल्लाह मसऊद तैमी

निस्सन्देह मानवता के निर्माण व विकास में धर्मों की भूमिका एक सर्वमान्य हकीक़त है इन्सान दुनिया के वजूद से आज तक किसी न किसी धर्म से संबन्धित रहा है। दुनिया के हर क्षेत्र और धर्म पर नज़र डाली जाये कोई भी काल धर्म से खाली नज़र नहीं आता आज जब कि इन्सान के निर्माण एवं विकास में धर्मों की भूमिका के बारे में लोग गलत फहमियों का शिकार होकर इसका मखौल बनाने पर तत्पर हैं और धर्म से दूरी को स्मिता और दुनिया विकास की जमानत मानते हैं जबकि मामला इसके विपरीत रहा है। मानवता के निर्माण एवं विकास की जमानत केवल धार्मिक जीवन गुजारने में निहित है।

विश्व धर्मों का अध्ययन कीजिए तो मालूम होगा कि यहूदियत और ईसाइयत जब तक अपनी किताबों में संशोधन से दूर रहीं उस वक्त तक एकेश्वरवाद से करीब रही और इन्सानों को एक नेक व अच्छा इन्सान बनाने में प्रयासरत रही। धर्म ने इन्सान को किसी हद तक ईश्वरीय शक्ति से संबद्ध कर दिया है। धर्म आस्था की ऐसी शक्ति का नाम है जो मानवता को महान नैतिक कसौटी पर ला खड़ा करता है कि इन्सान चाहे तो आस्मान को छू सके, धर्म इन्सानों को आध्यात्मिक पवित्रता देता है और इन्सान को विकास की राह दिखाता है।

हिन्दू धर्म के हवाले से बात की जाये तो वह भी धर्म को अहमियत देते हुए इन्सानों को धर्म से संबद्ध होना पसन्द करता है। प्रथम प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू जी ने डिस्कवरी आफ इंडिया बहावाल ''तलाशे हिन्द'' पृष्ठ ६०-६१ में लिखा हैः हिन्दुस्तान में धर्म के लिये प्राचीन काल में ''आर्याधर्म'' का शब्द प्रयोग किया जाता था। धर्म किसी चीज़ की अन्दुरूनी व्यवस्था या उसके संवैधानिक वजूद का नाम है यह एक ऐसी परिभाषिका है जो सारे नैतिक कानून और सभी मानवीय कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का समावेश करती है अर्थात मजहब को धर्म कहते हैं जिस का अर्थ पवित्र कानून है जो इन्सान को ब्रहमा से संबद्ध कर देता है।

धर्म इन्सानों को एक ईश्वर से जोड़ने का और उन्हें जीवन में विश्वास व सुख बहाल करने को बेहतरीन माध्यम है। मानवता जब तन्हाई में बेबसी और निराशा का शिकार होती है और विपदाओं और दुखों में घिर जाती है तो धर्म उसे आशा की किरण देता है और दुआओं में अल्लाह की मदद का विश्वास दिला कर उसके चेहरे पर मुस्कान ले आता है। इन्सान जब मज़हब से मजबूती के साथ जुड़ा रहता है तो कठिनाइयों का मनोबल के साथ मुकाबला करता है और आत्महत्या की कोशिश नहीं करता है।

धर्म इन्सान को सभ्य बनाने और उसके समाज को सामूहिकता और आध्यात्मिकता से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज में इन्सानों का अध्ययन किया जाये तो पता चलता है कि इन्सान धर्म से जुड़ा हुआ नहीं है वह स्वार्थ का शिकार है और वह नैतिक मूल्यों का उल्लंघन करता रहता है। धर्म ने ही

मानवता को यह चेतना दी है कि मां बाप के आपसी संबन्ध को मज़बूत किया जाये परिवारिक व्यवस्था बनायी जाये, इसे संवारा जाये, आगे बढ़ाने की कोशिश की जाये। संसार के सभी धर्मों ने मर्द और औरत के आपसी संबन्ध को पवित्र अन्दाज़ में जोड़ने का उपदेश दिया है और एक मजबूत समाज बनाने का प्रयास किया है जिस में इन्सानों का सम्मान व आदर बाक़ी रहे, अधिकार, कर्तव्य निर्धारित हो सकें, छोटों से दया करूणा का मामला किया जा सके। धर्म व्यक्तियों के सुधार के साथ समाज के सुधार पर जोर देता है।

धर्म नैतिक पहलुओं के संबन्धा को इन्सानों के समाजी मामलात के साथ खास करार देते हुए समाज में बसने वाले तमाम लोगों के साथ अच्छे व्यवहार करने और उनसे संबन्धों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सारांश यह है कि मानवता के निर्माण एवं विकास में दुनिया के वजूद से ही धर्म की भूमिका स्पष्ट रही है। आज भी साइंस व टेक्नालोजी के इस विकसित दौर में भी धर्मों की भूमिका से इन्कार संभव नहीं है। इस्लाम का अल्लाह का दिया हुआ एक ऐसा धर्म है जिसका अनुसरण सुख का कारण और उसकी शिक्षाओं पर अमल करने से दुनिया व आखिरत की भलाई निहित है।

दुनिया में आबाद इन्सान चाहे वह किसी धर्म से हो, उसका धर्म ही उसे समाजी व्यवस्था, नैतिक व्यवस्था और संस्कृति के सिद्धांत प्रदान करता है और उसके समाजी कामों के लिये कानून, मामलात और जीवन शैली निर्धारित करता है। इन्सान इससे मुंह मोड़ कर जीवन गुज़ारना अपनी तबाही और महा पाप भी मानता है। दुनिया की विकसित कौमें हों यह वहशी कबीले हों इन तमाम में किसी न किसी रूप में धर्म की संकल्पना रही है इसलिये कि कोई भी इन्सान धर्म के बिना न तो आध्यात्मिक और हार्दिक सुख पाता है और न ही अपने राजनैतिक, समाजी जीवन में किसी व्यवस्था एवं नियम का पाबन्द हो सकता है। आज पूरी दुनिया गलोबल विलेज का रूप धारण कर चुकी है और संगठनात्मक संस्थाओं, सोशल मीडिया और सरकारी व्यवस्था ने तमाम राज्यों को करीबतर कर दिया है, लेकिन फिर भी अत्यंत विकसित संसाधनों के बावजूद इन्सानी समाज असंतुलित नज़र आता है इस लिये कि अधिकतर समाज धर्म के बिना अक़ली और भौतिक आधारों पर स्थापित है। जबकि बन्धुत्व, बराबरी, संयम, उदारता, इमानतदारी, त्याग मोहताजों और संबन्धितों की मदद इन्सानों के यह वह नैतिक सिद्धांत हैं जिन के बिना मानव जीवन असंतुलित नजर आता है। निसन्देह धर्म के माध्यम से ही नैतिक और समाजी वर्चस्व प्राप्त किया जा सकता है। धर्म जिस इन्सान के पास न हो और वह किसी धर्म से संबन्धित न हो तो समाज में ऐसे इन्सानों का नैतिक पतन का शिकार हो जाना निश्चित है। मानवता का निर्माण एवं विकास धर्म के बिना अपनीअहमियत खो देता है।

दुनिया के हर धर्म ने मानवता को अहमियत दी है मानवता को विकसित करने पर जोर दिया है जहां दुनिया में कई धर्मों के मानने वाले बस्ते हैं वहां हर एक को धर्म से जुड़े रहना चाहिये और धार्मिक सिद्धांतों पर चलने की पूरी कोशिश करनी चाहिए तमाम धर्म यही चाहते हैं कि मानवता जीवित रहे।

❑❑❑

जिन्न

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

ईश्वर ने दो प्रकार के अदृश्य प्राणी बनाए हैं। वे हैंः फ़रिश्ते और जिन्न।

ऐसे अदृश्य प्राणी जो सदाशयता एवं सज्जनता के प्रतीक होते हैं, उन्हें फ़रिश्ते कहते हैं।

जिन्न ऐसे अदृश्य प्राणी हैं, जो भले और बुरे दोनों तरह के होते हैं।

आइए, अब 'जिन्न' शब्द की उत्पत्ति पर विचार करते हैं। अरबी भाषा में 'जिन्न' का अर्थ है छिपना। इसी से 'जुनून' और 'मजनून' बना है, जिसका अर्थ है अक़्ल को छिपा लेना, अर्थात 'मजनून' की अक़्ल काम नहीं करती, इसलिए उसके जी में जो आता है, वह करने लगता है।

इसी से एक शब्द और निकला है जिसको 'जनीन' कहते हैं, जो बच्चा मां के गर्भ में छिपा रहता है। इसी शब्द से 'जन्नत' भी निकला है, जिसका अर्थ है ऐसा घना बाग़ जो पृथ्वी को छिपा ले।

'जिन्न' के विषय में जितना विस्तृत वर्णन कुरआन में आतया है, उतना विस्तृत वर्णन किसी अन्य धर्मग्रन्थ में नहीं मिलता। शायद इसका कारण यह हो कि दूसरे धर्मों में जिन्नों को किसी प्रकार का कोई आदेश नहीं था, इसलिए उनके विषय में धर्म ग्रन्थों में कुछ अधिक बातें नहीं बताई गईं। परन्तु नबी मुहम्मद स० मनुष्यों और जिन्नों दोनों के लिए नबी बनाकर भेजे गए थे इसलिए उनका विस्तृत वर्णन करना पड़ा।

यहाँ कुरआन के संदर्भ में जिन्नों के विषय में कुछ विशेष बातें बयान की जा रही हैं। पहले उन बातों की चर्चा की जा रही है, जो मनुष्यों और जिन्नों के बीच अन्तर को स्पष्ट करती है।

१. जिन्नों को आग से पैदा किया गया, जबकि मनुष्यों को मिटटी से। कुरआन में है।

हमने मनुष्य को सड़ी हुई मिटटी के सूखे खनखनाते हुए गारे से बनाया और जिन्नों को इससे पहले लू की लपट से पैदा किया। (सूरा-१५, अल-हिज्र, आयतें-२६,२७)

मनुष्य को ठीकरे जैसी खनकती मिटटी से पैदा किया, और जिन्न को अग्नि ज्वाला से पैदा किया। (सूरा-५५, अर-रहमान, आयतें-१४,१५)

इसी कारण इब्लीस ने आदम को सजदा करने से इनकार कर दिया और कहा-

"मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं उस मनुष्य को सजदा करूं जिसको तूने सड़ी हुई मिटटी के सूखे गारे से बनाया।" (कुरआन, सूरा-१५, अल-हिज्र, आयत-३३)

इस आयत से यह भी पता चलता है कि इस धरती पर मनुष्यों से पहले जिन्न आबाद थे। फिर मनुष्य को पैदा किया गया, जो अल्लाह का ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) बना।

२. जिन्नों को एक विशेष प्रकार की शक्ति दी गई है जो मनुष्यों को

नहीं दी गई। कुरआन में इफ़रीत नामक जिन्न का उल्लेख हुआ है, जिसने सुलैमान नबी से कहा कि मैं सबा की रानी का सिंहासन आपके अपने स्थान से उठने से पूर्व ला सकता हूं। मैं इस काम के लिए शक्तिशाली और विश्वसनीय हूं। (कुरआन, सूरा-२७, अन-नम्ल, आयत-३६)

सबा जिसकी राजधानी मारिब थी, यमन देश की राजधानी सना से ५५ मील दूर उत्तर पूर्व में स्थित एक प्रदेश है और सुलैमान नबी बैतुल-मक़दिस,फ़िलिस्तीन के राजा थे। दोनों के बीच दो हज़ार से भी अधिक मील की दूरी है।

परन्तु सुलैमान के पास एक दूसरा जिन्न भी था जो 'इफ़रीत' से भी शक्तिशाली था। उसने कहा-

''मैं आपकी पलक झपकने से पहले उसे ला दूंगा। फिर जब उस (सुलैमान) ने उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो पुकार उठा, यह मेरे 'रब' 'रब' का अनुग्रह है, ताकि वह मेरी परीक्षा करे कि मैं कृतज्ञता दिखलाता हूं, या कुफ्र करता हूं।'' (कुरआन, सूरा-२७, अन-नम्ल, आयत-४०)

३. मनुष्य आकाश में किसी साधन के बिना धूम-फिर नहीं सकते जबकि जिन्न आकाश में बिना किसी साधन के घूम फिर सकते हैं और वहां से कुछ बातें भी उचक लेते हैं और उनमें अपनी ओर से बढ़ाकर लोगों को बता देते हैं परन्तु मलए-आला, जो सबसे उच्च्च दरबार है, तक नहीं पहुंच सकते, क्योंकि उसके निकट पहुंचते ही हर ओर से उन पर अंगारों की वर्षों कर दी जाती है।'' (सूरा-३७, अस-साफ़्फ़ात, आयतें-८-१०)

४. मनुष्य को अल्लाह ने एक ही रूप में रहने पर विवश किया है जबकि जिन्नों को अल्लाह ने यह अधिकार दिया है कि वे विभिन्न रूपों में मनुष्यों के सामने ज़ाहिर हो सकते हैं, और बहुत तेज़ी के साथ विभिन्न स्थानों पर पहुंच सकते हैं। इसलिए नबी स० ने हमें यह शिक्षा दी है कि अगर हम रात्रि में कहीं पड़ाव डालें तो यह दुआ पढ़ लें।

अ-ऊजु बि-कलिमातिल्लाहि त्ताम्मातिम-मिन-शर्रि मा ख़लक (सहीह मुस्लिम, २७०८) (सृष्टि के कष्ट पहुंचाने से अल्लाह के मुकम्मल कलिमों के ज़रिए शरण मांगता हूं।

इस दुआ के पढ़ने के कारण अगर वहां जिन्नों की आबादी है तो वे हमें हानि नहीं पहुंचा सकते।

५. मनुष्यों में से केवल सुलैमान को ही जिन्नों पर सत्ता का अधिकार दिया गया था।

सुलैमान के लिए इसकी सेनाएं एकत्र की गई जिनमें जिन्न भी थे और इनसान भी और पक्षी भी (कुरआन, सूरा-२७, अन-नम्ल, आयत-१७)

सुलैमान ने अल्लाह से एक दुआ की थी जिसमें उन्होंने कहा था।

''मेरे रब मुझे क्षमा कर दे, और मुझे वह राज्य प्रदान कर जो मेरे बाद किसी के लिए उचित न हो। निस्सन्देह तू ही सबसे बड़ा दाता है।'' कुरआन, सूरा-३८, साद आयत-३५)

एक सहीह हदीस में आया है कि नबी स० ने कहा-

''मैं रात में 'तहज्जुद' की नमाज़ पढ़ रहा था कि एक बड़ा ही शक्तिशाली (इफ़रीत) जिन्न मेरी

नमाज़ ख़राब करने की चेष्टा करने लगा, परन्तु अल्लाह ने मुझे उस पर विजयी कर दिया। मैंने चाहा कि उसको मस्जिद के खम्भों से बांध दूं, ताकि तुम लोग भोर होने पर उसे देखो। तब मुझे अपने भाई सुलेमान की यह बात याद आ गई, ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा राज्य प्रदान कर दे जो मेरे बाद किसी के लिए उचित न हो। तो मैंने उसे तिरस्कृत दशा में छोड़ दिया। (सहीह बुखारी, ४६१ तथा सहीह मुस्लिम, ५४)

यहां ऐसे राज्य से अभिप्राय ऐसा देश है जिसमें मनुष्यों की भांति जिन्नों की भी सेना हो और वे भी मनुष्यों की तरह काम करें। कुरआन में आया है-

सुलैमान जो कुछ चाहते वे (जिन्न) उसके लिए तैयार कर देते, जैसे ऊंचे-ऊंचे उपासना-गृह, प्रतिमाएं, पानी के बड़े हौज़ जैसे थाल और देंगे (भारी-भारी) जो एक ही स्थान पर जमी रहतीं। (सूरा-३४, सबा, आयत-१३)

लेकिन एक दूसरा मत यह भी है कि जिस क्षेत्र में जो नबी भी आते थे उस क्षेत्र के जिन्न उनका ही अनुकरण करते थे तभी तो वे तौरात से परिचित थे, जैसा कि सूरा अल-अहक़ाफ़ की आयत ३० में आया है।

६. जिन्नों के कामों में से यह काम भी है कि वे लोगों के दिलों में भ्रम (वसवास) डालें, जैसा कि कुरआन की सूरा-११४, अन-नास में हमें यह शिक्षा दी गई है कि हम जिन्नों के भ्रम से अल्लाह की पनाह मांगे।

अब उन बातों की ओर संकेत किया जाता है, जो जिन्न तथा मनुष्य दोनों में सामान्य रूप से पाई जाती हैं।

१. जिन्नों और मनुष्यों को अल्लाह ने अपनी इबादत (अथवा तौहीद के मार्ग पर चलने) के लिए पैदा किया। (कुरआन, सूरा-५१, अज़-ज़ारियात, आयत-५६) इसमें उन लोगों के विचारों का खंडन किया गया है जो जिन्नों को ही अपना उपास्य बना बैठे थे।

जिस दिन वह सबको इकटठा करेगा, फिर फ़रिश्तों से कहेगा, क्या ये लोग तुम्हारी ही पूजा करते थे। वे कहेंगे, ''तेरी महिमा हो! हमारा सम्बन्ध तो तुझसे है, न कि उनसे! बल्कि बात यह है कि वे जिन्नों की पूजा करते थे। इनमें से अधिकतर उनपर ईमान लाए हुए थे। (सूरा-३४, सबा, आयतें-४०, ४१)

इसलिए जहन्नम को जहां एक ओर मनुष्यों से भरा जाएगा वहीं जिन्नों से भी भरा जाएगा। (कुरआन, सूरा-११, हूद, आयत-११९ तथा सूरा-३२, अस-सज्दा, आयत-१३)

२. जिन्नों में भी मनुष्यों की भांति सदाचारी तथा कदाचारी पाए जाते हैं। (कुरआन, सूरा-७२, अल जिन्न, आयत-११)

३. इन दोनों प्राणियों को अल्लाह ने कुछ अधिकार दे रखे है इसलिए अल्लाह दोनों को सम्बोधित करते हुए कहता है:

ऐ मनुष्यों और जिन्नों के गरोह! यदि तुममें शक्ति है कि आकाशों और धरती की सीमाओं को पार कर सको, तो पार कर जाओ, तुम कदापि पार नहीं कर सकते बिना अधिकार शक्ति के। (कुरआन, सूरा-५५, अर-रहमान, आयत-३३)

४. जिन्न भी मनुष्यों की तरह स्त्रियों से सहवास करते हैं।

उन (अनुकम्पाओं) में निगाह बचाए रखने वाली स्त्रियां होंगी, जिन्हें उनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने। (कुरआन, सूरा-५५, अर रहमान, आयत-५६)

५. मनुष्यों की तरह जिन्नों की ओर भी रसूल भेजे गए-

ऐ जिन्नों तथा मनुष्यों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराते थे? वे कहेंगे, क्यों नहीं! (रसूल आए थे) हम ही स्वयं अपने विरूद्ध गवाह हैं। सांसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में रखा। मगर अब वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देने लगे कि वास्तव में वे विधर्मी थे। (सूरा-६, अल-अनआम, आयत-१३१)

६. अब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ियामत तक के लिए सारे संसार के लिए नबी बनाकर भेजे गए हैं। तो जिस प्रकार पहले नबियों की शिक्षाएं निरस्त हो गईं, उसी प्रकार जिन्नों के नबियों की शिक्षाएं भी निरस्त हो गईं। अब जिन्नों की सफलता भी इसी में है कि वे मनुष्यों की तरह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत को स्वीकार करें।

७. मनुष्यों और जिन्नों दोनों को चैलेंज किया गया कि तुम दोनों मिलकर भी कुरआन जैसी पुस्तक नहीं ला सकते। (देखें कुरआन, सूरा-१७, बनी इसराईल, आयत-८८)

८. मनुष्यों की तरह जिन्न भी गैब (परोक्ष) का ज्ञान नहीं रखते थे, जबकि यह बात मशहूर हो गई थी और आज भी लोग विश्वास करते हैं कि जिन्न ग़ैब का ज्ञान रखते हैं। इसका खंडन कुरआन ने यह कहकर कर दिया।

फिर जब हमने सुलैमान के लिए मौत का फ़ैसला लगू किया तो फिर उन जिन्नों को उसकी मौत का पता बस भूमि के उस कीड़े ने दिया जो उसकी लाठी को खा रहा था। जब सुलैमान गिर पड़ा तो जिन्नों ने कहा कि यदि वे ग़ैब का ज्ञान रखते तो इस अपमान के प्रकोप में फंसे न रहते। (देखिए सूरा-३४, सबा, आयत-१४)

जिन्नों का कुरआन सुननाः

कुरआन में जिन्नों के कुरआन सुनने का वर्णन आया है-

कई आयतों से स्पष्ट होता है कि जिन्नों द्वारा कुरआन सुनने की घटना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबी होने के प्रारंभिक समय में घटी होगी कयोंकि जब अल्लाह की ओर से वह्य आने लगी, तो आकाश में फ़रिश्तों को नियुक्त कर दिया गया, ताकि कोई जिन्न या शैतान वह्य उचक न ले। और फिर उसमें घटा-बढ़ा न दे। इसी की ओर इन आयतों में संकेत किया गया है। सहीह बुखारी ४६२१ तथा सहीह मुस्लिम ८८२ में अब्दुल्लाह बिन-अब्बास की यह हदीस आई है कि जब शैतान को आकाश के समाचार प्राप्त करने से रोक दिया गया तो उसने अपने लोगों को यह पता लगाने के लिए भेजा कि ऐसा क्यों हुआ। वे घूमते-घूमते नखला नाम के स्थान पर पहुचें, जहां नबी स० अपने साथियों के साथ भोर (फज्र) की नमाज़ पढ़ रहे थे। जब उन्होंने कुरआन सुना तो पुकार उठे कि यही वह चीज़ है जिसके कारण हमारे और आकाश

के समाचार के बीच रूकावट खड़ी कर दी गई है, और फिर वे अपने साथियों को बताने चले गए कि हमने एक अद्भुत कुरआन सुना है। अर्थात उस समय सूरा-७२, अल-जिन्न अवतरित हुई।

हाफिज़ इब्ने हजर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'बुखारी शरीफ़ की व्याख्या' में बताया है कि यह घटना मुहम्मद स० के नबी बनने के प्रारम्भिक समय की है। जिन्नों के कुरआन सुनने की दूसरी घटना का वर्णन कुरआन की सूरा-४६, अल-अहक़ाफ़ में आया है-

याद करो (ऐ नबी) जब हमने कुछ जिन्नों का ध्यान तुमहारी ओर कर दिया कि वे कुरआन सुन लें, तो जब वे वहां पहुंचे तो कहने लगे, ''चुप हो जाओ!'' फिर जब वह (कुरआन, का पाठ) पूरा हो गया, तो वे अपनी जातिवालों की ओर सचेत करने वाले बनकर लौटे। उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी जातिवालो! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद उतरी है, उसकी पुष्टि में है जो उससे पहले से मौजूद है, सत्य की ओर और सीधे मार्ग की ओर ले जाती है। ऐ हमारी जातिवालो, आमन्त्रणकर्ता का आमन्त्रण स्वीकार करो और उसपर ईमान लाओ। वह अल्लाह तुमहारे गुनाहों को क्षमा कर देगा, और तुम्हें दुखदाई यातना से बचा लेगा, और जो कोई अल्लाह के मन्त्रणकर्ता का आमन्त्रण स्वीकार नहीं करेगा तो वह धरती पर अल्लाह से बचकर कहीं नहीं जा सकता, और न इसके अतिरिक्त कोई उसका सहायक (वली) होगा, यही वे लोग हैं, जोखुली गुमराही में हैं।'' (सूरा-४६, अल-अहकाफ, आयतें २९-३२)

इन आयतों से पता चलता है कि जिन्न पहले से मूसा तथा ईसा पर ईमान रखते थे। इसलिए जब उन्होंने कुरआन को सुना तो पुकार उठे कि यह तो वही संदेश है जो मूसा और ईसा लेकर आए थे।

हदीसों से पता चलता है कि यह घटना उस समय घटी जब नबी ताइफ से वापस आ रहे थे, जो आप के नबी बनने का दसवां साल था। ताइफवालों ने आप को बहुत कष्ट पहुंचाया, जिसके कारण आप दुखी थे। इस घटना ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भरोसा दिलाया कि इनसान तो इनसान, जिन्न भी आप पर ईमान ला रहे हैं।

अब्दुल्लाह इब्ने-अब्बास का विचार है कि इनकी संख्या सात थी, जो तुर्की के नगर नसीबैन से आए थे। (देखिए इब्ने कसीर ७ २७२ और यह घटना भी नखला में घटी, क्योंकि वह एक ऐसा स्थान है जहां पानी है, जिसके कारण वहां पड़ाव डालना सरल होता है। इन दो घटनाओं के अतिरिक्त भी अनेक घटनाएं घटी हैं, जब जिन्न नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कुरआन सुनने आया करते थे, और कभी कभी आप स्वयं उनके पास चले जाया करते थे। सहीह रिवायतों से पता चलता है कि इस प्रकार की कोई सात घटनाएं घटी हैं

इस विषय में और भी बहुत कुछ लिखा जा सकता है, परन्तु विस्तार-भय से जिन्न-संबंधी विवरण को यहीं विराम दिया जाता है। अधिक जानकारी के लिए मेरी किताब 'जामिउल-कामिल' देखें।

❑❑❑

जैन इज़्म और मानव सम्मान

सईदुर्रहमान सनाबिली

निसन्देह संसार में जितने धर्म पाये जाते हैं सबने अपनी धार्मिक किताबों में मानव सम्मान का पाठ दिया है। यह बात सर्वमान्य है कि सभी धर्मों की बुनियाद मानवता पर है और हर धर्म के गुरूओं और मार्गदर्शकों ने मानवता को विकसित किया है और हर प्रकार की हिंसा को निषिद्ध क़रार दिया है, अहिंसा का सन्देश दिया है, संयम सहन शक्ति जैसी खूबियों को अपनाने की शिक्षा दी है, सच बोलने की प्रेरणा दी है, वर्ग टकराव को दूर करके समानता को विकसित किया है। सभी धर्मों ने अपने-अपने अनुयाइयों को मानव सम्मान की शिक्षा दी है और इन शिक्षाओं का पास व लिहाज रखने पर बल दिया है।

जैन धर्म और अहिंसा का एक ख़ास और गहरा संबन्ध है जैनी अन्य धर्मों की तरह जैन मत में भी मानव सम्मान से संबन्धित शिक्षाएं मौजूद हैं। यह शिक्षाएं जैने ध र्म की धार्मिक किताबों में मौजूद हैं। जैन मत में मौजूद मानव सम्मान से संबन्धित यह शिक्षाएं अत्यंत स्पष्ट है जिन्हें पढ़कर मालूम होता है कि जैन मत ने मानवता को सम्मान दिया है और क्षेत्र, जात, समुदाय भाषा और रंग व नस्ल की बुनियाद पर लोगों के बीच भेद भाव नहीं किया है बल्कि जैन मत में मानवता को इन्सान की हैसियत से इज्जत की निगाह से देखा गया है।

इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि जैन मत एक शान्ति प्रिय धर्म है क्योंकि इस में असंख्य ऐसी शिक्षाएं हैं जिनसे मानव सम्मान की बात स्पष्ट होती है।

जैन धर्म न केवल यह कि मानव अधिकार की बात कहता है बल्कि इससे आगे बढ़कर तमाम जानदारों के अधिकारों की बात करता है। जैन धर्म का दुनियावी दृष्किोण यह है कि तमाम जानदार चाहे वह इन्सान हों या जानवर, हर एक की अपनी एक आत्मा है। हर जानदार को अपनी इच्छाओं के अनुसार जीने का हक है। इन्सान को न केवल विभिन्न अधिकारों से नवाज़ा गया बल्कि उसे शोषण या जबरदस्ती से पाक वातावरण में रहने का हक़ भी हासिल है जहां वह अपनी क्षमताओं और प्रयासों के अनुसार पूर्ण इन्सान बना सकता है इसलिये उसे दूसरों के साथ बराबरी और भाईचारा की बुनियाद पर रहना चाहिए यही वह बुनियादी शिक्षाएं हैं जिन्हें अपना कर हर प्रकार वर्ग टकराव, जात समुदाय के मतभेद और रंग व नस्ल के अन्तर से अपने आप को बचा सकते हैं और मानवता को हकीकी इज्जत व सम्मान हासिल होता है। इस बुनियाद पर जैन मत को इन्सान का धर्म या तमाम जानदारों का धर्म कहना बेजा नहीं होगा।

जैन मत दुनिया के उन धर्मों में से एक है जो मानव सम्मान का बड़ा प्रचारक और झण्डावाहक है। जैन मत का सिद्धांत ही अहिंसा है जिस का अर्थ यह है कि एक जैनी को हर प्रकार के अहिंसा से रोका

गया है। अहिंसा एक साधारण परिभाषिका है जो कि अहिंसा के तमाम प्रकारों को शामिल है। हिंसा चाहे किसी इन्सान पर हो या जानवर पर हो या किसी दूसरी सृष्टि पर जैन धर्म में हर प्रकार की हिंसा को निषिद्ध और धर्म विरोधी बताया गया है।

जैन धर्म में कहा गया है कि जितनी भी जानदार चीज़ें हैं इन्सान, जानवर, कीड़े मकौड़े या पेड़ पौधे आदि सब में एक ही तत्व (आत्मा) मौजूद है अतः किसी पर अत्याचार किसी भी सूरत में दुरूस्त नहीं है।

महावीर का यह कथन है कि किसी जानदार को न मारना तमाम बुद्धिमत्ता का सारांश है।

जैन धर्म की धार्मिक किताबों में है कि बुद्धिमान की विशेषता यह है कि वह किसी जानदार को नहीं मारता।

एक बार महावीर ने अपने किसी शिष्य को संबोधित करते हुए कहा थाः

जैसा कि मैं मौत से लेकर अपने बालों को खींचने तक हर दर्द और दुख को महसूस करता हूं, इसी तरह इस बात का यक़ीन हो कि हर प्रकार के जानदार एक ही तरह के दर्द और दुख महसूस करते हैं। इस वजह से हर प्रकार के जानदारों को न मारा जाये न हिंसा का शिकार बनाया जाये, न बुरा व्यवहार किया जाये, न दुख दिया जाये, न जीवन से वंचित किया जाये, हर शख्स जो पाप करेगा वह इसकी सजा पाये गा इसे ख्याल में रखते हुए हर किसी को हिंसा की राह छोड़ देनी चाहिए और (अहिंसा का मार्ग अपनाना चाहिए अहिंसा एण्ड जैनिज्म, लेखक तारा सेठिया पृष्ठ ४३-४४)

मैं मौत से लेकर अपने बालों को खींचने तक हर दर्द और दुख को महसूस करता हूं, इसी तरह इस बात का यक़ीन हो कि हर प्रकार के जानदार एक ही तरह के दर्द और दुख महसूस करते हैं। इस वजह से हर प्रकार के जानदारों को न मारा जाये न हिंसा का शिकार बनाया जाये, न बुरा व्यवहार किया जाये, न दुख दिया जाये, न जीवन से वंचित किया जाये,

सहन शक्ति, उदारता ऐसी विशेषताएं हैं कि जिनसे मानव सम्मान विकसित होता है। जब हम जैन धर्म की बुनियादी शिक्षाओं का अध्ययन करते हैं तो मालूम होता है कि इस धर्म में उदारता और सहन शक्ति को विशेष अहमियत दी गई है यही वजह है कि हरि भद्र (७००-७७० ई०) उदारता का अनुरोध करता है लिखता है कि कार्यशैली पर विभिन्न दृष्टि कोण हो सकते हैं इसलिये आलोचना नहीं की जानी चाहिए क्योंकि कोई भी इन्सान किसी इन्सान के कर्म के तमाम हालात से परिचिति नहीं हो सकता वह समझौते के दुष्टिकोण की वकालत करता है और आग्रह करता है कि नेक दिल इन्सान को लांक्षन करना उचित नहीं है।

महावीर ने कहा कि झूठ बोलने वाले लोगों को तकलीफ पहुंचाते हैं, इसलिये झूठ बोलने से हमेशा बचना चाहिये।

❑❑❑

मानवीय मूल्यों की अहमियत

सुहैल अंजुम

संसार के सभी धर्मों में मानवता को बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त है। धर्म सम्मान का मतलब मानव सम्मान है। अगर धर्म का वास्तविक सम्मान हो गा तो मानवीय मूल्यों का भी सम्मान होगा। अगर किसी समाज में मानवीय मूल्यों का सम्मान नहीं है और उनकी पामाली हो रही है तो इसका अर्थ यह हुआ कि वहां धर्म सम्मान के जजबे का अभाव है। कोई भी धर्म मानवीय मूल्यों की पामाली की बात नहीं करता। सभ्य समाजों में मानवीय मूल्यों की बड़ी अहमियत दी गई है। इसके साथ साथ यह भी सच है कि मानवीय मूल्यों का सम्मान धर्म से ऊपर उठकर भी किया जाता है जो लोग किसी भी धर्म पर यकीन नहीं रखते वह भी मानवीय मूल्यों का सम्मान करते हैं। उनके नजदीक भी मानव अधिकारों की वही अहमियत है जो धर्म पर यकीन रखने वालों के नज़दीक है। यह भी एक हकीकत है कि मानवता को मज़हब नहीं कहा जा सकता। मानवता कोई धर्म नहीं है बल्कि एक सर्वव्यापी भावना है और अल्लाह की खुशी प्राप्त का एक माध्यम है। यह भावना विभिन्न समाजों में पाया जाता है। इस बात में कोई सन्देह नहीं कि सभी पैगम्बर अवतार और समाज सुधारकों ने मानवता का पाठ दिया है।

इस्लाम धर्म में मानव सम्मान की कितनी पासदारी है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस्लाम में शिक्षा दी गई है कि मानवता का सम्मान मौत के बाद भी ज़रूरी है यह हुक्म है कि मुर्दे को पूरे सम्मान के साथ स्नान दिया जाये, साफ सुथरा कफन पहना कर खुश्बू लगाया जाये, जनाजे की नमाज़ पढ़ी जाये, फिर कांधों पर उठा कर कब्रस्तान ले जाया जाये और दफन किया जाये। इन्सान होने के नाते हर शख्स का सम्मान ज़रूरी है। एक बार गैर मुस्लिम का जनाज़ा गुज़र रहा था पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जनाज़ा देख कर खड़े हो गये सहाबा किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम ने कहा यह तो यहूदी का जनाज़ा है। आप ने फरमायाः मौत एक भयजनक चीज़ है इसलिये तुम जनाज़ा देख कर खड़े हो जाया करो। यह मानवता सम्मान की एक अत्यंत उमदा मिसाल है।

अगर हम इन बातों की गहराई में जायें तो पायेंगे कि इन सबका किसी न किसी तरह संबन्ध मानव सम्मान से है इन तमाम बातों के सिरे से मानवतावाद से मिलते हैं। अगर इन बातों की व्याख्या की जाये तो मानवीय मूल्यों पर रोशनी पड़ेगी और यह साबित होगा कि सभी धर्मों में मानवता की सुरक्षा और उसके सम्मान को वरीयता प्राप्त है। आज दुनिया में नैतिक और मानवीय मूल्यों का उल्लंघन हो रहा है। ज़रूरत इस बात की है कि इन्सान जिस धर्म से भी संबन्ध रखता हो उसके मानवीय मूल्यों को अपनाए। मानव सम्मान की भावना अपनाए और दूसरे धर्मों का सम्मान करे।

❑❑❑

(प्रेस रिलीज)

मैं पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शहर से अम्न व मानवता का सन्देश लेकर आया हूंः इमाम मस्जिदे नबवी

राष्ट्रीय एकता, मानव सम्मान और भाईचारा को साधारण करना सबका कर्तव्यः मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी

नई दिल्ली ६ नवंबर २०२४

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द मुसलमानों का सबसे प्राचीन संगठन है। जिस का आधार कुरआन और हदीस है। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पदधारियों को बधाई देता हूं कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस ने इस कांफ्रेन्स का आयोजन करके मानवता का भूला हुआ पाठ याद दिलाने की कोशिश की है। मैं नबी के शहर से इस्लाम का अम्न व इन्सानियत का सन्देश लेकर भारत आया हूं। मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआला इस देश को अम्न व शान्ति का स्थल बनाये। यह उदगार मस्जिद नबवी के सम्माननीय इमाम डा० अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अल बईजान ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस द्वारा आयोजित ३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स से सम्बोधित करते हुए रामलीला मैदान में किया।

कांफ्रेन्स के अध्यक्ष मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि आज मानवता विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रही है। इन्सान भौतिकवाद, दुनियादारी की तरफ मायल है और आख़िरत की जवाबदेही से निडर होता जाता है। इस्लाम ने एक दूसरे के धर्म और धार्मिक किताबों का सम्मान करने और समाजी एवं धार्मिक उदारता का हुक्म दिया है।

उन्होंने कहा कि अन्तरधर्मीय वार्ता एक दीनी व समाजी आवश्यकता है। पैगम्बर हज़रत मुहममद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वयं हिलफुल फजूल में और नजरान के ईसाइयों से वार्ता करके हम को यह सन्देश दिया है कि हम एक दूसरे को समझने अपनी बात को दूसरों के सामने पेश करने का प्रयास करें।

राबता आलमे इस्लामी के सहसचिव डा० अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह अल ज़ैद ने कहा कि मैं हिन्दुस्तान राबता आलमे इस्लामी की तरफ से अम्न व शान्ति और मुहब्बत भरा सन्देश लेकर आया हूं। इस कांफ्रेन्स के दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे।

डाक्टर हसन अल मरजूकी सह सचिव विव कमेटी मुत्तहेदा अरब इमारात ने कहा कि हिन्दुस्तान बहत बड़ा मुल्म है जिसके अन्दर करोड़ों लोग बसते हैं। भाषायें विभिन्न हैं, पूजा के तरीक़े अलग अलग हैं इसके बावजूद सबके सब संयुक्त समाज अम्न व शान्ति के साथ रहते हैं यह प्रशंसनीय है।सवागत सभा के अध्यक्ष डा० अब्दुल अजीज़ रहमानी मुबारकीपुरी ने कहा कि इस्लाम एक विश्वव्यापी धर्म है। उसकी शिक्षाएं किसी क्षेत्र तक सीमित नहीं हैं।

जमीअत ओलमा-ए-हिन्द के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने कहा कि मुसलमान जहां भी रहें उनको इस्लाम का व्यवहारिक आदर्श

पेश करते रहना चाहिये।

इस उदघाटन सत्र से जमीअत अहले हदीस आँध्रा प्रदेश के अध्यक्ष ने सम्बोधित करते हुए कहा कि समाज में इन्सान के जान व माल इज्जत व आबरू की सुरक्षा का उपदेश और आदेश हर धर्म में दिया गया है इन शिक्षाओं को अपनाने की ज़रूरत है।

सूबाई जमीअत अहले हदीस झारखण्ड के अमीर क़ारी मुहम्मद यूसुफ ने कहा कि दिलों से मनमोटाव दूर करने और समाज में अम्न व शान्ति और आपसी भाईचारा का वातावरण स्थापित करना होगा।

मर्कज़ी जमीअत के संरक्षक मौलाना सलाहुददीन ने कहा कि इस्लाम में कुत्ते का भी अपमान करने से रोका गया है जब जानवर के साथ अच्छा बर्ताव करने का उपदेश दिया गया है इन्सान इस ध ारती की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि है वह और ज्यादा सम्मान का पात्र है।

मर्कज़ी जमीअत के संरक्षक डा० अब्दुर्रहमान फरेवाई ने कहा कि इस्लाम ने मानव सम्मान की शिक्षा दी है उन्होंने कहा कि इस्लाम के अनुयाइयों ने मानव सम्मान की बेहतरीन मिसाल पो की है।

नदवतुल मुजाहिदीन केरला के जिम्मेदार डा० अब्दुल मजीद अस्सलाही ने कांफ्रेनस के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत के सभी पदध ाारियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि मानवीय मूल्यों को पामाल होने से बचाना और मानव सम्मान को बढ़ावा देना हम सब की संयुक्त जिम्मेदारी है । सूबाई जमीअत अहले हदीस पूर्वी यूपी के अध्यक्ष मौलाना अतीकुर्रहमान साहब ने कहा कि जिस तरह से हमारे पूर्वजों ने त्याग से काम लिया है उसी तरह हमको भी त्याग का प्रदर्शन करने की ज़रूरत है। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस जम्मू कश्मीर के अध्यक्ष डा० अब्दुल लतीफ किंदी ने कहा कि भूले हुए लोगों को मानवता का कर्तव्य याद दिलाना ज़रूरी है। फ़साद, इज्जत और जान की पामाली से पूरी मानवता को निकालने की ज़रूरत है। स्पष्ट रहे कि मस्जिदे नबवी के इमाम डा० अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अल बईजान १० नवम्बर को मग़्रिब और इशा की नमाज़ पढ़ायेंगे और इस्लाम का अम्न व शान्ति का सन्देश सुनायेंगे।

(प्रेस रिलीज़)

जुमादल उख़्रा १४४६ का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली, २ दिसंबर २०२४

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २९ जुमादल ऊला १४४६ हिजरी अर्थात २ दिसंबर २०२४ को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और सफ़रूल मुजफ्फर के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि मंगल के दिन जुमादल ऊला की ३०वीं तारीख होगी।

मुसलमान इस्लाम के साथ अपना रिश्ता मज़बूत करें : इमाम मस्जिदे नबवी

इस्लाम ने मानवता का सम्मान और धर्म सम्मान का आदेश दिया है: मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी

नई दिल्ली १० नवंबर २०२४ (प्रेस रिलीज)

मस्जिद नबवी के सम्माननीय इमाम अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अल बईजान ने राम लीला मैदान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा आयोजित ३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स के अन्तिम सत्र में खचाखच भरी सभा से खिताब करते हुए कहा कि मुसलमान अपने अन्दर अल्लाह का भय पैदा करें क्योंकि पूरी कामियाबी अल्लाह से डरने में है और आख़िरत में निजात का ज़रिया है। हमें अल्लाह ने इस्लाम जैसी नेमत दी है इस दीन की ख़िदमत पूरी मिल्लत की ज़िम्मेदारी है। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि इस्लाम की तालीमात को पूरी दुनिया तक पहुंचायें। कुरआन के साथ संबन्ध को कायम रखें और मज़बूत बनायें।

सम्माननीय अमीर ने इस महत्वपूर्ण कांफ्रेन्स के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष को बधाई दी। और भलाई का काम क़रार दिया। मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी अध्यक्ष मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिद ने कहा कि इस्लाम अम्न व शान्ति और भाई चारा का धर्म है और जीवन के हर मोड़ पर उसने मानवता का उपदेश दिया है और इस्लाम के अनुयाइयों ने भी मानवता का सम्मान और धार्मिक उदारता की मिसाल पेश की है। अन्य धर्मों ने भी धार्मिक उदारता का जो पाठ दिया है उन ध र्मों के मानने वालों को अपनाने की ज़रूरत है। बौध धर्म गुरू श्री आचार्य यशीपन्त शोक जी ने मानवता का सम्मान और विव धर्म के शीर्षक पर कांफ्रेन्स के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध यक्ष मौलाना असगर अली को बधाई देते हुए कहा कि सभी धर्मों के लोगों को मिलकर शान्तिपूर्ण वार्ता करना चाहिये। श्री आचार्य सुशील मुनि सनातन धर्म गुरू ने जमाअते अहले हदीस के भाई चारा और गंगा जमुनी सभ्यता को बनाकर रखने के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा धार्मिक मूल्यों पर अमल करने से देश और समाज मज़बूत होगा।

अचार्य विवेक मुनि जैन धर्म गुरू ने कांफ्रेन्स के शीर्षक की सराहना

करते हुए कहा कि मानवता और मुहब्बत के साथ रहने के पैगाम को साधारण करने की ज़रूरत है। इस कांफ्रेन्स से आल इंडिया इमाम संगठन के अध्यक्ष जनाब उमैर इलयासी, मज्लिसे मुस्लिम मुशावरत के अध्यक्ष एडोकेट फिरोज अहमद अंसारी, मौलाना सनाउल्लाह मदनी, सूबाई जमीअत अहले हदीस मुम्बई के अध्यक्ष मौलाना अब्दुस्सलाम सलफी, जमाअते इस्लामी के अध्यक्ष इंजीनियर सैयद सआदतुल्लाह अल हुसैनी, मौलाना फजलुर्रहमान अध यक्ष सूबाई जमीअत अहले हदीस आंध्राप्रदेश, सूबाई जमीअत अहले हदीस हरियाणा के अध्यक्ष डा० ईसा खान अनीस, मौलाना मुफ्ती अताउर्रहमान क़ासमी, डा० अब्दुल्लाह लुकमान सलफी अध्यक्ष जामिया इमाम इब्ने तैमिया, सूबाई जमीअत अहले हदीस तामिल नाडू के सचिव हाफिज़ अब्दुल वाहिद आदि ने सम्बोधित किया।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले

हदीस हिन्द

३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स सफलतापूर्वक संपन्न

नई दिल्ली ११ नवंबर २०२४

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा ''मानवता का सम्मान और विश्वधर्म'' दो दिवसीय आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स मर्कज़ी जमीअत के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की दुआ के बाद १० नवंबर को दस बजे रात सफलता पूर्वक संपन्न हो गई जिस में मस्जिदे नबवी के सम्माननीय इमाम अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अलबईजान ने शिर्कत की और इस कांफ्रेन्स से अम्न व शान्ति और इस्लाम के मानवतावादी सन्देश को सुनाया। इस कांफ्रेन्स में देश विदेश से सैकड़ों आलिम और विभिन्न मतों के धर्म गुरूओं ने शिर्कत की।

इस अवसर पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द द्वारा प्रकाशित होने वाली तीनों पत्रिकाओं इस्लाहे समाज हिन्दी, जरीदा तर्जुमान उर्दू मासिक सिम्पल टुरूथ इंगलिश के विशेषांक का विमोचन हुआ। इस अवसर पर महत्वपूर्ण हस्तियों को उनकी सेवाओं को स्वीकार करते हुए एवार्ड का एलान किया गया और देश व समुदाय से संबन्धित क़रारदाद एवं प्रस्ताव पास किये गये। प्रस्ताव में अकीद-ए-तौहीद को लोगों तक पहुंचाने, सभी धर्मों के धर्म गुरूओं का सम्मान करने, किसी ध र्म का अपमान करने से बचने, संयम बरतने और उत्तेजना और समाजी बुराइयों से बचने की अपील, और मदर्सों से संबन्धित उच्चतम न्यायालय के फैसले का स्वागत किया गया है। क़रारदाद में इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया है कि वास्तव में इन्सान सम्माननीय है इसका हर व्यक्ति को ख्याल रखना चाहिए और किसी भी ऐसे कथन और व्यवहार से बचना चाहिए जिस से इन्सान का सम्मान प्रभावित होता है। मानवता के सन्देश को साधारण करें, भाईचारा का वातावरण बनायें, वार्ता के कलचर को विकसित करे क्योंकि यही वह तरीका है जिससे प्रेम विकसित और शान्तिपूर्ण जीवन यापन को संभव बनाया जा सकता है। (जरीदा तर्जुमान में प्रकाशित प्रेस रिलीज़ का सारांश)

धार्मिक ज्ञान और इतिहास का महत्व

नौशाद अहमद

यह ज्ञान और विज्ञान का दौर है, आज के ज़माने में इल्म का मतलब पैसा भी होता है, इस लिये ज्ञान और विज्ञान की अहमियत से किसी भी हाल में इन्कार नहीं किया जा सकता। ज्ञान दो तरह का होता है एक ज्ञान वह होता है जिस से इन्सान दुनिया कमाता है और इसके माध्यम से वह अपनी दुनियावी जरूरतों को पूरी करता है, और इसी के सहारे वह अपने परिवार का पालन पोषण भी करता है। दूसरा ज्ञान वह है जो इन्सान के आखिरत (मरने के बाद के जीवन) से जुड़ा हुआ है। यह ज्ञान इन्सान को मरने के बाद सफलता की ओर ले जाता है। इसी ज्ञान से इन्सान को यह मालूम होता है कि उसको आखिरत में कामयाब होने के लिये क्या करना है और क्या नहीं करना है। उसके पालनहार ने अपनी इबादत के लिये उसको जो तरीक़े बताए हैं वह क्या हैं क्योंकि इस ज्ञान के हासिल किये बगैर वह सहीह तौर पर अपने धार्मिक कर्तव्यों का निर्वहन नहीं कर सकता। अगर वह धार्मिक ज्ञान हासिल नहीं करेगा तो उसे दूसरों का मोहताज बनना पड़ेगा। आज के जमाने में धर्म का ज्ञान हासिल करना कुछ भी मुश्किल नहीं रह गया है सारी चीज़ों का हासिल करना सरल हो गया है। दुनिया की जिस भाषा में चाहे पढ़ सकता है अपने धर्म को और अपने दुनिया में आने के मकसद को जान सकता है। यह इन्सान की जिन्दगी की कामयाबी और नाकामी का आधार है। मरने के बाद हिसाब किताब के वक़्त कोई इन्सान या व्यक्त यह कह कर नहीं बच सकता कि उसको तो अपने धर्म के बारे में कोई ज्ञान ही नहीं था, संसाधन की कमी नहीं है। दुनिया की हर भाषा में धर्मिक बातों और आदेशों को जानने के लिये बहुत से मैटेरियल मौजूद हैं हमें इस बारे में किसी तरह की कोताही नहीं करनी चाहिए। मां बाप को भी चाहिए कि बच्चों को शुरू ही से धार्मिक ज्ञान दिलाने में भरपूर प्रयास करें।

न धार्मिक ज्ञान की अहमियत से इन्कार किया जा सकता है और न आधुनिक ज्ञान की अहमियत से इन्कार किया जा सकता है।

इतिहास का ज्ञान जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है। आज विश्व स्तर पर जिस तरह सहीह इतिहास को गलत बनाने की कोशिश हो रही है वह सब के सामने है। इस सिलसिले में सबसे अफसोसनाक (खेदजनक) बात यह है कि हम लोग खुद अपने इतिहास से अनभिज्ञ और नावाक़िफ़ हैं जबकि इस्लामी इतिहास दुनिया का पहला ऐसा इतिहास है जो सहीह हालत में मौजूद है और जिसके संरक्षण के लिये हमारे पूर्वजों ने अथक मेहनत की है आज इसको भी गलत बनाने की कोशिश हो रही है। यह इतिहास न जानने का ही परिणाम है कि

गलत चीज़ों को पढ़ने के बाद हम लोग भ्रमित हो जाते हैं और कुछ लोग इस्लाम और मुसलमानों के बारे में भ्रमित करने ही में लगे हुए हैं ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि हम धार्मिक ज्ञान रखने के साथ अपने इतिहास और करन्ट ख़बरों का भी ज्ञान रखें यह वक़्त की एक बड़ी ज़रूरत है। आइये संकल्प करते हैं कि धार्मिक ज्ञान और आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ इस्लामी इतिहास का भी ज्ञान रखेंगे।

इतिहास के अध्ययन का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे दीन की रक्षा होती है सहीह और गलत का पता चलता है, इंसान भ्रमित होने से बच जाता है, सच्चाई का दिफा करने का हुनर पैदा होता है, इन्सानी जीवन को हौसला मिलता है। अभूतपूर्व में जो गलतियां हुई हैं उससे बचने का तरीक़ा मालूम होता है सहीह और गलत में अन्तर करने की क्षमता पैदा हो जाती है।

आज के दौर में गलत खबरों और अफ़वाहों को फैलाने का जो चलन शुरू हुआ है ऐसे में इतिहास के अध्ययन की अहमियत और ज़्यादा बढ़ जाती है।

अम्न व शान्ति

अम्न व शान्ति इन्सान का बुनियादी अधिकार है, दुनिया के ज़्यादातर इन्सान अम्न व शान्ति चाहते हैं, जब अम्न व शान्ति रहेगी तो समाज का हर वर्ग समृद्ध और खुश्हाल रहेगा, उसका कारोबार सहीह रहेगा, बाल बच्चों की शिक्षा को भी सहीह दिशा मिलेगी, भविष्य का रास्ता आसान होगा, योजनाएं बनाने में भी आसानी होगी, बड़े बड़े प्रोजेक्टों को कामबयाबी अम्न व शान्ति के माहौल ही में मिलेगी, संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि हर चीज़ की कामयाबी और नाकामी अम्न व शान्ति से जुड़ी हुई है।

विभिन्न समाजों में बेचैनी और असुख की जो स्थिति है वह कुछ लोगों के अहंकार और स्वार्थ की वजह से है, अहंकार और स्वार्थ को खतम करके ही समाज को सहीह दिशा में ले जाया जा सकता है। स्वार्थ समाज की एक बड़ी और जटिल समस्या है। स्वार्थी हमेशा केवल अपने फायदे की सोचता है वह समाज के दूसरे लोगों के नफा के बारे में कम ही सोचता है, वह अपने मकसद को पूरा करने के लिये हर वह तरीक़ा अपनाता है जो उसे तथाकथित कामयाबी की तरफ ले जाता है। लेकिन सच्चाई यह है कि यह लाभ वक़्ती और अस्थाई होता है, बाद में इसका नुकसान स्वार्थी भी उठाता है। हमें इस मानसिकता से निकलने के लिये व्यक्तगत स्तर पर प्रयास करना होगा हर व्यक्ति स्वयं से यह सोचने और विचार करने की शुरूआत करे कि वह जो कुछ भी कर रहा है क्या वह सहीह है, कहीं उसके किसी कर्म से समाज के दूसरे वर्ग का नुकसान तो नहीं हो रहा है। अगर यह सोच हर व्यक्ति के अन्दर पैदा हो जाए तो बहुत सारी बुराइयां स्वयं खतम हो जाएंगी। जो भी इन्सान अपनी किसी बुराई पर जमे रहता है तो इसकी सबसे बड़ी वजह उसका अहंकार है अगर यह इन्सान के मन-मस्तिष्क से खतम हो जाए तो समाज में किसी तरह की विसंगति नहीं पैदा हो गी और समाज में अम्न व शान्ति ही का वातावरण होगा और आज का इन्सान इसी अम्न व शान्ति की तलाश में है अल्लाह दुनिया के हर इन्सान और देश को अम्न व शान्ति नसीब करे।

❑ ❑ ❑

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के परिणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्धा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता
असगर अली इमाम महदी सलफी
अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

DECEMBER 2024
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

खुशख़बरी खुशखबरी

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का

कलैन्डर 2025

आकर्षक, खुशनुमा, हर सफा इस्लामी तालीमात और कुरआनी आयात से सुसज्जित और अहम मालूमात से पुर कलेन्डर के लिए अपना आर्डर बुक करायें।

मकतबा तर्जुमान

Ahle Hadees Manzil 4116, Urdu Bazar
Jama Masjid, Delhi-110006

Paytm UPI

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)
पताः-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Ph. 23273407, Fax : 23246613

9899152690@ptaxis

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

28

Total Pages 28